वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 84 | गुरुवार 3 सितम्बर 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मतदाता जागरूकता के लिए 200 स्काउट्स ने निकाली रैली, बनाई मानव श्रृंखला

जयपुर. शाबाश इंडिया

नगरीय निकाय आम चुनाव में आमजन को मतदान के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से जिला निर्वाचन कार्यालय जयपुर द्वारा स्वीप (सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता) कार्यक्रम के तहत निकाली गई मतदाता जागरूकता रैली को स्वीप प्रभारी एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद् शुभम भाईसारे ने बुधवार को स्काउट एंड गाइड मंडल मुख्यालय, बनीपार्क से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। 200 स्काउट्स की यह रैली विभिन्न मार्गों से होते हुए जिला कलेक्ट्रेट सर्किल पहुंची, जहां स्काउट्स ने कलेक्ट्रेट सर्किल के चारों ओर मतदाता जागरूकता के लिए मानव श्रृंखला बनाई और मतदान जागरूकता से जुड़े प्रेरक नारे लगाए। इस दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी जिला कलेक्टर संदेश नायक ने बताया कि जयपुर जिले की एक नगर निगम के 150 वार्डों के सदस्यों के लिए 11 सितंबर को, वहीं 2 नगर परिषद् सहित कुल 18 नगरीय निकायों के 540 वार्डों के सदस्यों के लिए 09 सितंबर को प्रातः 7:00 बजे से सांय 6:00 बजे तक मतदान होगा। उन्होंने जिले के नगरीय निकायों के सभी मतदाताओं से अपील की है कि वे लोकतंत्र के इस पर्व में अधिक से अधिक संख्या में मतदान कर लोकतंत्र को मजबूत बनाने में अपना योगदान अवश्य दें। इस अवसर पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी मेघराज मीना ने सभी को मतदाता जागरूकता की शपथ दिलाई। इस दौरान सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के उपनिदेशक हेमंत सिंह, स्काउट एवं गाइड मंडल मुख्यालय एस.सी.ओ. दामोदर प्रसाद शर्मा, सहित अन्य अधिकारी व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

राजस्थान के गांवों में सड़क, खेल और कृषि सुविधाओं का विस्तार, सीएम ने दिए निर्देश

गांवों में विकास को मिलेगी नई रफ्तार

5 हजार से अधिक आबादी वाले गांवों में बनेंगे अटल प्रगति पथ, किसानों को मिलेंगे नए संसाधन

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर उच्चस्तरीय बैठक में ग्रामीण विकास से जुड़े विभागों की योजनाओं और कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि प्रदेश के गांवों में कृषि, सड़क, रोजगार, शिक्षा और युवा कल्याण पर विशेष ध्यान देते हुए बड़े पैमाने पर विकास कार्य कराए जाएंगे। इन प्रयासों का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करने के साथ लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना है।

हर ग्राम पंचायत में चरणबद्ध बनेंगे अटल ज्ञान केंद्र

मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल सशक्तीकरण और ज्ञान संसाधनों तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर चरणबद्ध रूप से अटल ज्ञान केंद्र स्थापित किए जाएंगे। इन केंद्रों में आधुनिक पुस्तकालय और ई-पुस्तकालय की सुविधा उपलब्ध होगी। ग्रामीण युवा यहां प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के साथ करियर मार्गदर्शन, रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण और सरकारी सेवाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के चौथे चरण के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में करीब 3,219 किलोमीटर लंबी सड़कों का निर्माण किया जाएगा।

इनमें से वर्ष 2026-27 में 1,500 किलोमीटर सड़कों का निर्माण पूरा करने का लक्ष्य है, जबकि शेष सड़कों का निर्माण आगामी वर्ष में किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अटल प्रगति पथ योजना के तहत 5 हजार से अधिक आबादी वाले ग्रामीण क्षेत्रों में सीमेंट-कंक्रीट सड़कों का निर्माण किया जा रहा है।

पहली बार 2450 मंत्रित लौंग से हुआ भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान

उपाध्याय उर्जयन्त सागर मुनिराज का मिला मंगल आशीर्वाद, 306वें भक्तामर स्तोत्र पाठ एवं 48 मंडलीय दीप महाअर्चना में गूंजे जयकारे

जयपुर. शाबाश इंडिया

मानव एवं समाज सेवा के लिए समर्पित तथा प्रेम और बंधुत्व के साथ सेवा के उद्देश्य से कार्यरत विश्व की सबसे बड़ी दंपती सदस्यों की संस्था जैन सोशल ग्रुप्स इंटरनेशनल फेडरेशन, मुंबई के नॉर्दर्न रीजन के तत्वावधान में जैन सोशल ग्रुप हेरिटेज सिटी, जयपुर की ओर से भट्टारक जी की नसियां के छतरी वाला सभागार में पहली बार 2450 मंत्रित लौंग से भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान का आयोजन किया गया। इस दौरान पूरा परिसर भगवान आदिनाथ के जयकारों से गूंज उठा। 306वें भक्तामर स्तोत्र पाठ एवं 48 मंडलीय भक्तामर स्तोत्र आराधना और दीप महाअर्चना अनुष्ठान में विभिन्न जैन सोशल ग्रुप्स के दंपती सदस्य एवं संगिनी फोरम की सदस्याएं बड़ी संख्या में शामिल हुईं। जैन सोशल ग्रुप हेरिटेज सिटी के संस्थापक अध्यक्ष सुभाष बज एवं अध्यक्ष नितिन पाटनी ने बताया कि उपाध्याय उर्जयन्त सागर मुनिराज के मंगल आशीर्वाद से शाम 7:15 बजे से आयोजित इस विशाल अनुष्ठान में विश्व में सुख, शांति, समृद्धि एवं आरोग्यता की कामना की गई। समाजसेवी अतुल-शशी सोगाणी, आगरा वालों ने मुख्य अतिथि के रूप में सहभागिता निभाई। समाजश्रेष्ठी अशोक-शकुन्तला चांदवाड ने भगवान आदिनाथ के समक्ष मुख्य दीप प्रज्ज्वलित किया, जबकि रेणू तथा मोहित-नम्रता राणा ने मुख्य मंडल पर शास्त्र विराजमान किए। समाजश्रेष्ठी महावीर-सुनीता कसेरा, सुभाष-किरण बडजात्या, मारोठ वाले तथा अनिल-उमा दीवान गौरवमयी अतिथि के रूप में शामिल हुए।

जेएसजीआईएफ नॉर्दर्न रीजन के चेयरमैन राजीव पाटनी एवं सचिव रविन्द्र बिलाला ने बताया कि संगीतकार गौरव जैन एवं खुशबू जैन, कुचामन सिटी ने भक्तिमय प्रस्तुतियां दीं। सुभाष बज एवं नितिन पाटनी ने ऋद्धि मंत्रों के साथ भक्तामर स्तोत्र का पाठ कराया। सुभाष-शशि बज एवं महावीर-सुरीला सेठी के संयोजन में आयोजित इस अनूठे अनुष्ठान में श्रद्धालुओं ने 48 मंडलों पर उपाध्याय उर्जयन्त सागर मुनिराज से मंत्रित 2450 लौंग अर्पित कीं। श्रद्धालुओं ने हाथों में दीपक लेकर भक्ति नृत्य करते हुए मुख्य मंडल पर दीपक अर्पित किए। इस दौरान जैन भजनों पर श्रद्धालुओं ने भक्ति नृत्य कर भगवान की आराधना की। कार्यक्रम के अंत में भक्तामर स्तोत्र की महिमा का वर्णन किया गया और सभी श्रद्धालुओं ने आशिका ली। इस अवसर पर जेएसजीआईएफ फेडरेशन के उपाध्यक्ष महेन्द्र गिरधरवाल, नॉर्दर्न रीजन के पूर्व चेयरमैन राकेश जैन, सुभाष चन्द जैन, प्रदीप जैन, जी.पी. टोंग्या, वाइस चेयरमैन डॉ. राजीव जैन, कोषाध्यक्ष तरुण जैन, वीरेन्द्र गदिया सहित जेएसजी हेरिटेज सिटी के सचिव अरुण-सुनीता पाटनी, डॉ. सुदीप-शालिनी जैन, राजीव-रेणू बज सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

लेकसिटी में स्टार्टअप और निवेशकों का बड़ा संगम, 25 नवाचारों को मिलेगा फंडिंग का मंच

उदयपुर. शाबाश इंडिया

अच्छे आइडिया को कारोबार में बदलने की राह में पूंजी और सही मार्गदर्शन की कमी से जूझने वाले स्टार्टअप के लिए उदयपुर में निवेश के नए दरवाजे खुलने जा रहे हैं। बीसीआई युवा की ओर से ''आरंभ निवेशक संपर्क 2026'' के माध्यम से देशभर के नवोदित उद्यमियों को एंजेल निवेशकों, वेंचर कैपिटल फर्मों और फंड मैनेजर्स से सीधे जोड़ने की पहल की गई है। कार्यक्रम के लिए करीब 200 स्टार्टअप आवेदन कर चुके हैं, जिनमें से 25 को अंतिम प्रस्तुति के लिए चुना जाएगा। बीसीआई के संस्थापक मुकेश माधवानी ने बताया कि नवाचार और प्रतिभा होने के बावजूद अनेक स्टार्टअप सही निवेश और रणनीतिक मार्गदर्शन के अभाव में अपेक्षित विस्तार नहीं कर पाते। 'आरंभ' का उद्देश्य इसी अंतर को दूर करते हुए योग्य स्टार्टअप को उपयुक्त निवेश

और बाजार के अवसर उपलब्ध कराना है। मंच पर फंडिंग के साथ नेटवर्किंग, मेंटरशिप और बिजनेस ग्रोथ से जुड़े मार्गदर्शन पर भी विशेष जोर रहेगा। बीसीआई युवा अध्यक्ष मीनाक्षी पालीवाल ने बताया कि 15 सितंबर को आयोजित निवेशक संपर्क कार्यक्रम में चयनित स्टार्टअप अपने बिजनेस मॉडल को मुंबई, गुजरात, दिल्ली, उदयपुर सहित विभिन्न शहरों से जुड़े निवेशकों और उद्योग प्रतिनिधियों के सामने प्रस्तुत करेंगे। उपाध्यक्ष रोहित पालीवाल के अनुसार चयनित स्टार्टअप के लिए करीब 10 करोड़ रुपए तक के संभावित निवेश अवसर तैयार किए जा रहे हैं। इसके बाद 25 सितंबर को उदयपुर के द थर्ड स्पेस में अंतिम प्रस्तुति सत्र होगा। यहां स्टार्टअप की बाजार क्षमता, आय और विकास दर, वित्तीय स्थिति, निवेश आवश्यकता, वैल्यूएशन और भविष्य की योजनाओं का परीक्षण किया जाएगा। सचिव अंकुश रांका ने बताया कि 26 सितंबर को चयनित स्टार्टअप और निवेशकों के बीच विस्तृत संवाद और निवेश प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए अंतिम सुविधा कार्यक्रम आयोजित होगा। महासचिव हिम्मत प्रजापत ने कहा कि पहल में ऐसे स्टार्टअप को प्राथमिकता दी जाएगी जिनका बिजनेस मॉडल मजबूत होने के साथ बड़े स्तर पर रोजगार और आर्थिक अवसर पैदा करने की क्षमता रखता हो। इस अवसर पर रोचक भावसार, संतोष मेघवाल, तिजेन्द्र साहू, राहुल कुमावत, नसन जैन, बीसीआई पिनाकल अध्यक्ष अंशुल मोगरा, बीसीआई अल्फा के संजीव पटवा और लोकेश जोशी सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

रिपोर्ट: राकेश शर्मा 'राजदीप'

हिंदी दिवस पर नाथद्वारा बनेगा साहित्य साधना का केंद्र, तीन दिन जुटेंगे देशभर के रचनाकार

जयपुर के एम डी सोनी और उदयपुर संभाग से कृतिका शाह पाएंगे पत्रकारिता सम्मान

उदयपुर/नाथद्वारा. शाबाश इंडिया

हिंदी दिवस के अवसर पर इस बार नाथद्वारा देशभर के साहित्यकारों, कवियों, पत्रकारों, संपादकों और हिंदी सेवियों के बड़े समागम का साक्षी बनेगा। साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा की ओर से 12 से 14 सितंबर तक श्री भगवती प्रसाद देवपुरा प्रेक्षागृह में तीन दिवसीय ''हिंदी लाओ, देश बचाओ'' समारोह आयोजित किया जाएगा। इस आयोजन में हिंदी की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर विचार-मंथन के साथ सम्मान समारोह, पुस्तक लोकार्पण, अखिल भारतीय कवि सम्मेलन और साहित्यकारों की नगर परिक्रमा प्रमुख आकर्षण होंगे। संस्था के प्रधानमंत्री श्याम प्रकाश देवपुरा के अनुसार समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से करीब दो सौ साहित्यकार भाग लेंगे। तीन दिनों में ''हिंदी उपनिषद्'' और ''हिंदी हुँकृति'' के अलग-अलग सत्रों में हिंदी भाषा के राष्ट्रीय विस्तार, डिजिटल युग में उपयोग, गैर हिंदी भाषी राज्यों में स्थिति और हिंदी प्रचार की चुनौतियों पर विद्वान अपने विचार रखेंगे। साहित्य मंडल की ओर से प्रतिभागियों के आवास और भोजन की व्यवस्था निशुल्क की जाएगी। समारोह का शुभारंभ 12 सितंबर को सुबह 9.15 बजे गणेश, सरस्वती और श्रीनाथजी वंदना, राष्ट्रभाषा गान, लोकनृत्य एवं योग प्रस्तुति के साथ होगा। प्रथम हिंदी उपनिषद् में महाराष्ट्र, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, गुजरात और जम्मू-कश्मीर में हिंदी की चुनौतियों और संभावनाओं पर वक्ता अपने विचार व्यक्त करेंगे। इनमें डॉ. अवधेश कुमार, आर. श्रीदेवी, डॉ. प्रीति पाण्डेय, डॉ. एम. अनुराधा, प्रो. दिलीप मेहरा और डॉ. शशिकांत मिश्र शामिल हैं। पहले दिन विभिन्न राष्ट्रीय स्तर के सम्मानों और मानद उपाधियों से साहित्यकारों को सम्मानित किया जाएगा। संतोष कुमार आर.जे. 'जेमि' को जीवनलाल अग्निहोत्री स्मृति सम्मान तथा उमेश पाठक को बृजकांत साहित्य सम्मान प्रदान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त जयप्रकाश पाण्डेय, प्रो. नरेंद्र मिश्र, डॉ. प्रकाशनारायण त्रिपाठी, डॉ. कृष्णचंद्र पाण्डेय और डॉ. मुन्ना तिवारी सहित अनेक साहित्यकारों को हिंदी भाषा विभूषण, हिंदी भाषा शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि और हिंदी काव्य शिरोमणि जैसी मानद उपाधियों से अलंकृत किया जाएगा। दूसरे दिन 13 सितंबर को हिंदी हुँकृति के साथ पत्रकारिता, संपादन और भाषा सेवा से जुड़े व्यक्तित्वों का सम्मान होगा। हिंदी उपनिषद् के द्वितीय सत्र में हिंदी की राष्ट्रीय मर्यादा और लोकतंत्रीय प्रतिमान, डिजिटल युग में हिंदी की भूमिका, गुजरात में हिंदी के बढ़ते कदम, हिंदी प्रचार : समस्या और समाधान तथा ऊपरी असम में हिंदी की वर्तमान स्थिति जैसे विषयों पर व्याख्यान होंगे। डॉ. राहुल, डॉ. ईश्वर एच. आहिर, डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, डॉ. मनीषा गिरी और बिमल बड़ा वक्ताओं में शामिल रहेंगे। इसी दिन रात 8 बजे अखिल भारतीय कवि सम्मेलन आयोजित होगा, जिसमें देश के प्रतिष्ठित कवि काव्य पाठ करेंगे। समारोह के अंतिम दिन 14 सितंबर को साहित्यकार नाथद्वारा नगर की परिक्रमा करेंगे। यात्रा संस्था परिसर से शुरू होकर अहिल्याकुंड, ब्रजपुरा, सिनेमा मार्ग, नई हवेली, रावत दरवाजा, माणक चौक, चौपाटी बाजार, दिल्ली बाजार, बड़ा बाजार, प्रीतमपोल और सराफा बाजार सहित नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरेगी। अंतिम दिन हिंदी उपनिषद् तृतीय में विश्वभाषा की ओर हिंदी के बढ़ते कदम, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को शूल, देश की आत्मा : हिंदी और जन-जन की भाषा है हिंदी विषयों पर मंथन होगा। इसी अवसर पर साहित्य, संस्कृति, संगीत, इतिहास, समाजसेवा, पत्रकारिता और संपादन के क्षेत्र में योगदान देने वाले अनेक रचनाकारों को साहित्य-संस्कृति शिरोमणि, पत्रकार-संपादक प्रवर तथा हिंदी साहित्य-काव्य भूषण जैसी मानद उपाधियों से सम्मानित किया जाएगा। करीब 30 पुस्तकों के लोकार्पण के साथ तीन दिवसीय यह आयोजन हिंदी दिवस को केवल उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि हिंदी की सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय भूमिका पर व्यापक संवाद के मंच के रूप में स्थापित करेगा।

रिपोर्ट: राकेश शर्मा 'राजदीप'

राजनीति

मक्का समझौते से बदलता पश्चिम एशिया का सुरक्षा समीकरण

कांतिलाल मांडोत

पश्चिम एशिया और दक्षिण एशिया की राजनीति में एक नया सुरक्षा समीकरण आकार लेता दिखाई दे रहा है। तुर्किये, पाकिस्तान और सऊदी अरब के बीच हुए मक्का संयुक्त रक्षा समझौते के बाद इस्तांबुल में हुई रणनीतिक बैठक ने संकेत दिया है कि यह पहल महज कूटनीतिक घोषणा तक सीमित नहीं रह सकती। तीनों देशों के विदेश और रक्षा नेतृत्व तथा सैन्य अधिकारियों की भागीदारी से स्पष्ट है कि सैन्य सहयोग, संस्थागत ढांचे और दीर्घकालिक रणनीति पर गंभीर विचार शुरू हो चुका है। इसका प्रभाव खाड़ी क्षेत्र से लेकर दक्षिण एशिया और हिंद महासागर तक पड़ सकता है। मक्का समझौते का प्रमुख आधार सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा है। इसके तहत किसी एक सदस्य पर हमला व्यापक साझा सुरक्षा चुनौती माना जाएगा। हालांकि इसे अभी किसी औपचारिक सैन्य संगठन के समकक्ष मानना जल्दबाजी होगी। इसकी वास्तविक ताकत इस बात से तय होगी कि संकट के समय तीनों देश किस स्तर तक सैन्य, खुफिया और राजनीतिक सहयोग करते हैं। इस्तांबुल की बैठक ने समझौते के व्यावहारिक पक्ष को भी रेखांकित किया है। संयुक्त सैन्य अभ्यास, सेनाओं के बीच समन्वय, रक्षा अनुसंधान और हथियार उत्पादन में सहयोग जैसी संभावनाएं इसे केवल राजनीतिक साझेदारी से आगे ले जा सकती हैं। तुर्किये की विकसित होती रक्षा तकनीक, पाकिस्तान का सैन्य अनुभव और सऊदी अरब की आर्थिक क्षमता यदि व्यवस्थित रूप से जुड़ती है तो तीनों देशों की सामूहिक सामरिक क्षमता मजबूत हो सकती है। इस गठजोड़ के संभावित विस्तार की चर्चा भी महत्वपूर्ण है। यदि भविष्य में अन्य मुस्लिम बहुल देश इससे जुड़ते हैं तो इसका भौगोलिक और राजनीतिक प्रभाव बढ़ सकता है। बांग्लादेश, कतर, कुवैत और बहरीन जैसे देशों को लेकर चचाएं सामने आती रही हैं, लेकिन इन देशों के निर्णय केवल धार्मिक निकटता से तय नहीं होंगे। उन्हें अमेरिका, चीन, भारत और अन्य प्रमुख शक्तियों के साथ अपने मौजूदा संबंधों तथा राष्ट्रीय हितों को भी ध्यान में रखना होगा। यही कारण है कि यह घटनाक्रम भारत के लिए महत्वपूर्ण है। नई दिल्ली की चुनौती किसी तत्काल सैन्य खतरे से अधिक व्यापक है।

संपादकीय

बदलती विश्व व्यवस्था में भारत की निर्णायक भूमिका

किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में 1 सितंबर 2026 को संपन्न 26वें शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन ने बदलती वैश्विक राजनीति की तस्वीर को एक बार फिर स्पष्ट किया है। संगठन की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित सम्मेलन में भारत, चीन, रूस, पाकिस्तान, ईरान सहित सदस्य देशों के शीर्ष नेताओं ने सुरक्षा, आतंकवाद, व्यापार, ऊर्जा, निवेश, तकनीक

और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की। सम्मेलन में 28 परिणाम दस्तावेजों को मंजूरी दी गई और पाकिस्तान को 2026-27 के लिए संगठन की अध्यक्षता सौंपी गई। शंघाई सहयोग संगठन का महत्व इसलिए बढ़ गया है क्योंकि दुनिया इस समय गंभीर भू-राजनीतिक तनाव से गुजर रही है। पश्चिम एशिया में संघर्ष, रूस-यूक्रेन युद्ध, ऊर्जा सुरक्षा की चुनौतियां और वैश्विक व्यापार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को जटिल बना दिया है। ऐसे समय में शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंच केवल औपचारिक कूटनीतिक बैठकों तक सीमित नहीं रह सकते। उन्हें संवाद, शांति, सुरक्षा और आर्थिक सहयोग के प्रभावी माध्यम के रूप में अपनी भूमिका मजबूत करनी होगी। इस सम्मेलन में भारत का रुख विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद के खिलाफ भारत की स्पष्ट नीति को दोहराते हुए इसे मानवता के लिए गंभीर चुनौती बताया और इसके खिलाफ प्रभावी सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर दिया। भारत लंबे समय से यह स्पष्ट करता रहा है कि आतंकवाद को किसी भी राजनीतिक उद्देश्य या बहाने के आधार पर उचित नहीं ठहराया जा सकता। संगठन के मंच पर भारत का यह संदेश इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें ऐसे देश भी शामिल हैं जिनके साथ भारत के सुरक्षा संबंधी गंभीर मतभेद हैं। भारत के लिए शंघाई सहयोग संगठन की सबसे बड़ी चुनौती चीन और पाकिस्तान के साथ अपने जटिल संबंधों के बीच संतुलन बनाए रखना है। एक ओर भारत रूस और मध्य एशिया के साथ अपने पारंपरिक रणनीतिक संबंधों को मजबूत करना चाहता है, वहीं दूसरी ओर चीन के साथ सीमा और आर्थिक मुद्दों पर अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना भी जरूरी है। पाकिस्तान के साथ आतंकवाद का प्रश्न भारत की सुरक्षा नीति का केंद्रीय विषय बना हुआ है। शंघाई सहयोग संगठन में भारत का दृष्टिकोण किसी एक शक्ति-गुट का हिस्सा बनने के बजाय रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने का है। प्रधानमंत्री मोदी की रूस और चीन के शीर्ष नेताओं के साथ मुलाकातों से यह संकेत मिलता है कि भारत संवाद के सभी रास्ते खुले रखते हुए अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देता है। इसे किसी नए गठबंधन के रूप में देखना जल्दबाजी होगी। भारत की विदेश नीति का आधार स्वतंत्र निर्णय, बहुध्रुवीयता और राष्ट्रीय हितों के अनुरूप संतुलित कूटनीति है। आर्थिक मोर्चे पर भी संगठन के सामने व्यापक संभावनाएं हैं।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

दलित विरोधी मानसिकता की जड़ें

निर्मल रानी

उत्तराखंड के हल्द्वानी रामलीला मैदान में गत 8 अगस्त को कांग्रेस पार्टी ने ''विजय शंखनाद रैली'' आयोजित की थी। रैली को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने संबोधित किया। 11 अगस्त को इसी मंच पर ''श्री राम सेना धर्मार्थ सेवा न्यास'' से जुड़े कुछ लोगों ने गंगाजल छिड़ककर उसकी सफाई की और हवन किया। इसे 'शुद्धिकरण' नाम दिया गया। कांग्रेस ने इसे दलित अपमान का मुद्दा बनाया। खड़गे ने राज्यसभा में कहा कि इस शुद्धिकरण से उन्हें छुआछूत के डंक और अपमान का अहसास हुआ। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी ने भी इसे दलित समाज का अपमान और संविधान विरोधी मानसिकता बताया। राहुल गांधी ने आरोपियों के खिलाफ अनुसूचित जाति एवं जनजाति अत्याचार निवारण कानून के तहत कार्रवाई की मांग की। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किए। दिल्ली और नागपुर में भी विरोध दर्ज कराया गया तथा कुछ प्रदर्शनकारियों ने मनुस्मृति की प्रतियां जलाकर आक्रोश जताया। उनका कहना था कि यह संघर्ष संविधान और मनुस्मृति आधारित सामाजिक व्यवस्था की विचारधाराओं के बीच है। हालांकि किसी मंच के शुद्धिकरण की घटना को सीधे पूरे संगठन या समुदाय की मानसिकता का प्रमाण मानने से पहले उसके जिम्मेदार व्यक्तियों और परिस्थितियों की जांच आवश्यक है। देश में जातिगत भेदभाव के अनेक मामले इस बहस को गंभीर बनाते हैं। दलित लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता भंवर मेघवंशी का अनुभव इसका एक उदाहरण है। वे किशोरावस्था में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा से जुड़े और आगे चलकर संगठन में जिम्मेदारियों तक पहुंचे। अपनी आत्मकथा 'मैं एक कारसेवक था' में उन्होंने जातिगत भेदभाव से जुड़े व्यक्तिगत अनुभवों का उल्लेख किया है। उनके अनुसार, संघ के कुछ वरिष्ठ पदाधिकारियों ने उनके घर का भोजन स्वीकार नहीं किया और बाद में वह भोजन फेंक दिया गया। उन्होंने इसे गहरा अपमान माना और संगठन से दूरी बना ली। उनके अनुभवों पर बहस हो सकती है, लेकिन ऐसे संस्मरण जातिगत पूर्वाग्रहों पर विचार का अवसर देते हैं। दरअसल, दलित विरोधी मानसिकता केवल राजनीतिक संगठनों तक सीमित समस्या नहीं है। ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में दलितों को सामाजिक हैसियत का एहसास कराने के लिए कई अमानवीय प्रथाओं का सामना करना पड़ता है। दलित दूल्हों की घोड़ी चढ़ने, मूंछ रखने, महंगे जूते पहनने और बराबरी से बैठने को लेकर हिंसा की घटनाएं सामने आती रही हैं। कुओं, हैंडपंपों, तालाबों और मंदिरों में प्रवेश को लेकर भी टकराव होते हैं। शिक्षण संस्थानों में जातिगत टिप्पणियां, भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार की शिकायतें भी सामने आती हैं। कई जगह दलित बच्चों को भोजन में अलग बैठाने या उनके हाथ का भोजन स्वीकार न करने जैसी घटनाएं होती हैं। दलित महिलाओं को जाति और लिंग, दोनों स्तरों पर भेदभाव तथा हिंसा का सामना करना पड़ता है। हाथरस और खैरलांजी जैसी घटनाओं ने इस भयावह सच को सामने रखा है। जमीन, मजदूरी और सामाजिक बराबरी के सवाल पर दलित बस्तियों के खिलाफ हिंसा और बहिष्कार के मामले भी सामने आते रहे हैं। कानून ने छुआछूत और जातिगत भेदभाव को अपराध घोषित किया है, लेकिन सामाजिक मानसिकता बदलना अभी बाकी है। इसलिए, शिक्षा, प्रशासन, न्याय व्यवस्था और सामाजिक व्यवहार में समानता सुनिश्चित करनी होगी। किसी भी विचारधारा या संगठन का मूल्यांकन उसके नारों से नहीं, बल्कि कमजोर वर्गों के प्रति उसके व्यवहार से होना चाहिए।

दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल की कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न

दस लक्षण पर्व के धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सुगंध दशमी की झांकियों के अवलोकन के लिए कमेटी गठित

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल की कार्यकारिणी समिति की बैठक दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभु मंदिर, दुर्गापुरा में सम्पन्न हुई। अध्यक्ष अनिल जैन, सेवानिवृत्त आईपीएस एवं महामंत्री महावीर जैन बाकलीवाल ने बताया कि आगामी 15 से 25 सितंबर 2026 तक आयोजित होने वाले दस लक्षण पर्व के दौरान विभिन्न दिगम्बर जैन मंदिरों में होने वाले धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा सुगंध दशमी पर सजाई जाने वाली झांकियों के अवलोकन के लिए एक कमेटी का गठन किया गया है। कमेटी में सर्वसम्मति से राजेश जैन बड़जात्या को मुख्य समन्वयक एवं शांति जैन काला को मुख्य संयोजक मनोनीत किया गया। बैठक में दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय महामंत्री सुरेन्द्र कुमार जैन पांड्या भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर अंचल महामंत्री महावीर जैन बाकलीवाल के जन्मदिन पर महासमिति कार्यकारिणी के सदस्यों ने उन्हें माला एवं दुपट्टा पहनाकर बधाई दी। कार्यक्रमों एवं झांकियों के अवलोकन के लिए सह संयोजक के रूप में राकेश गोदिका, अशोक लुहाड़िया, निर्मल संघी, राजेन्द्र साह, अजीत जैन बड़जात्या, लोकेश सोगानी, जिनेश रांवका, महावीर जैन चांदवाड, राजेन्द्र जैन पापड़ीवाल, योगेश टोडरका, रवि जैन झोटवाड़ा, सुरेन्द्र कुमार मोदी, अशोक गोधा एवं निर्मल जैन को मनोनीत किया गया। मुख्य संयोजक एवं मुख्य समन्वयक से कहा गया कि वे विभिन्न दिगम्बर जैन मंदिरों में होने वाले कार्यक्रमों के संबंध में मंदिर समितियों के अध्यक्ष एवं मंत्री से संपर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त करें। साथ ही कार्यक्रमों के सुचारु अवलोकन के लिए आवश्यकता के अनुसार अलग-अलग समितियां गठित की जाएं। बैठक में दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल की ओर से एक मिलन कार्यक्रम आयोजित करने का भी निर्णय लिया गया। इसके संयोजक के रूप में निर्मल जैन, मालवीय नगर को मनोनीत किया गया। अंत में महामंत्री महावीर जैन बाकलीवाल ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

खुशियों का बाजार कार्यक्रम के तहत कन्याओं को निशुल्क सलवार-सूट वितरित

महावीर इंटरनेशनल एवं माही वीरा केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में हुआ आयोजन

बांसवाड़ा. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल द्वारा पूरे देश में चलाए जा रहे ''खुशियों का बाजार'' कार्यक्रम के अंतर्गत बांसवाड़ा महावीर इंटरनेशनल एवं माही वीरा केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में कन्या अनाथ आश्रम (आश्रय सेवा संस्थान), सिंगवाव, बांसवाड़ा में निशुल्क वस्त्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान कन्याओं को नए सलवार-सूट वितरित किए गए। संस्था के अध्यक्ष डॉ. महावीर सेठिया ने अल्प समय में आयोजित इस सेवा कार्यक्रम की सराहना की। महेन्द्र चौधरी ने कन्याओं को 1700 रुपये की नगद राशि प्रदान की। माही वीरा केंद्र की अध्यक्षा गीता ने संस्था की ओर से संचालित निशुल्क सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम की जानकारी दी। सचिव आशा जो मित्तल ने कन्याओं को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने तथा अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर वीरेन्द्र जैन, सुनील कोठारी एवं चंद्रशेखर सहित माही वीरा केंद्र की कांता भाटी, उषा पोरवाल, हेमलता ओझा, ऋषि कन्या व्यास, उषा कंसारा, नैना जैन, निकिता दोषी आदि ने कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में सहयोग किया। संस्था के सचिव मनोज सेठ ने बताया कि सभी कन्याओं के लिए विशेष रूप से नए वस्त्र खरीदकर भेंट किए गए, ताकि वे नई ऊर्जा और उत्साह के साथ अपने जीवन में आगे बढ़ें और समाज में अपना स्थान बनाएं। उन्होंने बताया कि इस संस्था से शिक्षा प्राप्त कर कई कन्याएं आज पुलिसकर्मी एवं अध्यापिका के रूप में समाज में अपनी सेवाएं दे रही हैं।

सिंगल यूज प्लास्टिक के दुष्प्रभावों से बच्चों को किया जागरूक

महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर ने राजकीय प्राथमिक विद्यालय हेरपाड़ा में आयोजित किया सेमिनार

गढ़ी परतापुर. शाबाश इंडिया

महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर केंद्र की ओर से राजकीय प्राथमिक विद्यालय हेरपाड़ा (घानेवा) में बच्चों एवं शिक्षकों को सिंगल यूज प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से सेमिनार आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत विद्यालय की कार्यवाहक प्रधानाध्यापिका सूर्या खांट ने महावीर इंटरनेशनल के डायरेक्टर, नॉलेज शेयरिंग एवं ई-चौपाल अजीत कोठिया का स्वागत कर की। विद्यालय के बच्चों ने पुष्प अर्पित कर अतिथियों का सम्मान किया। मुख्य वक्ता अजीत कोठिया ने सिंगल यूज प्लास्टिक को पर्यावरण के लिए घातक बताते हुए बच्चों एवं शिक्षकों से इसके प्रयोग को बंद करने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि प्लास्टिक लंबे समय तक जमीन में दबे रहने के बावजूद आसानी से नष्ट नहीं होता। उन्होंने प्लास्टिक की थैलियों के स्थान पर कपड़े के कैरी बैग का प्रयोग करने की अपील की। कोठिया ने आगामी वर्षाकाल में अधिक से अधिक पेड़ लगाने का आह्वान करते हुए कहा कि इससे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्राणवायु ऑक्सीजन का संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकेगा। उन्होंने महावीर इंटरनेशनल के ''मिशन ऑक्सीजन'' के बारे में जानकारी देते हुए गिरते भूजल स्तर को बढ़ाने के उपाय भी बताए। कार्यक्रम में विद्यालय के बच्चों एवं शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में अजीत कोठिया ने बच्चों को सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग नहीं करने की शपथ दिलाई। संचालन अजीत कोठिया ने किया, जबकि आभार विद्यालय की कार्यवाहक प्रधानाध्यापिका सूर्या खांट ने व्यक्त किया।

संसार भ्रमण से बचो, भव-सागर पार करो : पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी गुरुदेव

संयम जीवन का श्रृंगार, इच्छाओं का विराम ही दीक्षा

नई दिल्ली, ऋषभोदय. शाबाश इंडिया। पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी गुरुदेव के शिष्य श्रुत संवेगी श्रमण सुव्रतसागर महाराज ने बताया कि दिल्ली के ऋषभोदय में विराजित दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति के उन्नायक पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी गुरुदेव ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए जीवन में संयम, आत्मकल्याण, प्रभु भक्ति और धर्म के महत्व पर प्रकाश डाला।

संयम जीवन का श्रृंगार

गुरुदेव ने कहा कि मनुष्य जीवन का श्रेष्ठतम श्रृंगार शील और संयम है। संयम सुर-दुर्लभ है और इसके लिए स्वर्ग के देव भी तरसते हैं। महापुरुष संयम धारण कर शांति के पथिक बनते हैं। संयम सुख का साधन है और संयमी स्वयं के साथ दूसरों के कल्याण का भी कारण बनता है। प्राणियों की रक्षा करना प्राणी-संयम है, जबकि इंद्रियों के विषय-भोगों से विरक्त होना इंद्रिय-संयम है।

संसार भ्रमण से बचो, भव-सागर पार करो

गुरुदेव ने कहा कि अनादि काल से संसारी जीव अविद्या, मोह, राग-द्वेष के वश में होकर दुखी अवस्था में संसार-सागर में गोते लगा रहा है। मनुष्य, नरक और तिर्यंच सहित चारों गतियों में जीव निरंतर कष्ट प्राप्त करते हुए भ्रमण करता रहता है। उन्होंने कहा कि यदि शाश्वत सुख, शांति और आनंद प्राप्त करना है तो राग-द्वेष का त्याग कर यथार्थ तत्त्व-बोध प्राप्त करना चाहिए तथा आत्मशोधन का पुरुषार्थ करना चाहिए। शांति चाहिए तो संसार-भ्रमण से बचें, भव-सागर को पार करें और जन्म-मरण के आवागमन पर विराम लगाएं।

भगवत भक्ति सुखों की दात्री

उन्होंने कहा कि प्रभु भक्ति से पुण्यवर्धन होता है और पापों का क्षय होता है। प्रभु भक्ति आनंद प्रदान करती है। भक्ति ही मुक्ति का आधार है तथा प्रभु भक्ति से संसार के सभी सुख प्राप्त होते हैं। गुरुदेव ने कहा कि जीवन में शांति चाहिए तो परीक्षा करके गुरु का चयन करना चाहिए। सच्चे, संयमी, ज्ञानी-ध्यानी और परोपकारी गुरु के प्रति ही अपनी आस्था समर्पित करनी चाहिए। जो अधर्मी हैं, पापों से पतित हैं तथा राग-द्वेष से मलिन हैं, ऐसे अज्ञानी को अपनी आस्था का देवता नहीं मानना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी आस्था निर्दोष परमात्मा के प्रति और समर्पण सच्चे गुरु के प्रति होना चाहिए। गुरुदेव ने कहा कि जिनशासन और जैन धर्म में वही व्यक्ति दीक्षा धारण कर सकता है, जो अपनी आकांक्षाओं को कम कर ले और इच्छाओं पर विराम लगा दे। अपनी अनंत इच्छाओं पर विराम लगाना ही दीक्षा है। उन्होंने कहा कि जो जीव पाप कर्मों के कारण नरक या तिर्यंच आयु का बंध कर चुका है, वह पलभर भी संयम धारण नहीं कर सकता। जो मनुष्य भावपूर्वक द्रव्य-संयम धारण करता है, वह पुण्य के प्रभाव से यथोचित मरण को प्राप्त कर स्वर्ग में देवत्व प्राप्त करता है तथा तीर्थंकर और चक्रवर्ती जैसे पदों को प्राप्त करने का अधिकारी बनता है।

किसी को ठुकराओ मत, धर्म सिखाओ

गुरुदेव ने कहा कि सभी के दिन एक जैसे नहीं होते और परिस्थितियां बदलने में देर नहीं लगती। इसलिए किसी को हीन-दीन नहीं समझना चाहिए और किसी को ठुकराना नहीं चाहिए। निर्धन को धन, भूखे को भोजन, प्यासे को पानी और रुग्ण को औषधि उपलब्ध कराएं। पीड़ित की पीड़ा हरने का प्रयास करें तथा सभी को सत्य का बोध कराकर धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ाएं।

-श्री अभिषेक अशोक पाटील

कार्याध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद, कोल्हापुर

पंच परमेष्ठी और रत्नत्रय धर्म ही जीव की वास्तविक शरण: सिद्ध श्री माताजी

छहढाला की पांचवीं ढाल के माध्यम से बताया जीवन की अनित्यता और आत्मकल्याण का मार्ग

कलिंजरा. शाबाश इंडिया

आध्यात्मिक वर्षायोग 2026 के अंतर्गत सिद्ध श्री माताजी के मंगल प्रवचन का आयोजन हुआ। आर्यिका 105 सिद्ध श्री माताजी ने छहढाला की पांचवीं ढाल के माध्यम से जीवन की अनित्यता और वास्तविक शरण के महत्व पर प्रकाश डाला। माताजी ने कहा कि संसार की सभी वस्तुएं अनित्य हैं, जबकि आत्मा शाश्वत है। शरीर और पुद्गल निरंतर परिवर्तनशील हैं, लेकिन आत्मा के स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं होता। कर्मों के संपर्क के कारण जीव अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर संसार में भटक रहा है। उन्होंने पंडित दौलतराम की पंक्ति ''मणि मंत्र तंत्र बहु होई, मरते न बचावे कोई'' का भावार्थ समझाते हुए कहा कि चिंतामणि, कल्पवृक्ष, कामधेनु, धन-संपत्ति और राजपाट मनुष्य को भौतिक सुख प्रदान कर सकते हैं, लेकिन मृत्यु के समय एक सांस भी नहीं बढ़ा सकते। आयु कर्म समाप्त होने पर कोई भी व्यक्ति या साधन जीव को मृत्यु से नहीं बचा सकता। माताजी ने कहा कि मां-बेटा, परिवार, मित्र और धन जीवन में कुछ समय तक सहयोगी हो सकते हैं, लेकिन अंतिम समय में कोई किसी की शरण नहीं बन सकता। पंच परमेष्ठी भगवान और रत्नत्रय रूपी धर्म ही जीव की वास्तविक शरण हैं। उन्होंने श्रद्धालुओं से आह्वान किया कि संसार के क्षणिक सहारों के पीछे भटकने के बजाय आत्मकल्याण, प्रभु-स्मरण और कर्मनिर्जरा का पुरुषार्थ करें। राग का त्याग कर आत्मस्वरूप की शरण में जाने का प्रयास ही जीवन का वास्तविक उद्देश्य है।

जो हर परिस्थिति में मुस्कराता है, वही दुनिया में भगवान बन पाता है : आचार्य पुलकसागर महाराज

आचार्य पुलकसागर ससंघ के सानिध्य में पर्युषण पर्व पर 'पाप नाशनम' शिविर 16 से 25 सितंबर तक

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। सुख-दुख सभी के जीवन में आते हैं, लेकिन जो व्यक्ति हर परिस्थिति में मुस्कराता है, वही भगवान बनने की ओर अग्रसर होता है। हम छोटी-छोटी बातों पर लड़ते रहेंगे तो अनंत सुख की प्राप्ति कैसे होगी? अपने स्वभाव में रहकर सुखी रहने का नियम बना लें। हमारे पास कुछ हो या न हो, लेकिन दुख को अपने पास नहीं आने देंगे और हर क्षण खुश रहेंगे। मनुष्य भव मिला है तो आनंद की अनुभूति करें और यदि नरक जाना है तो दुख को अंगीकार करें। यह विचार श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, मेन सेक्टर, शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगम्बर जैन समाज की ओर से भीलवाड़ा में पहली बार चातुर्मास कर रहे राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य पुलकसागर जी महाराज ने बुधवार को शास्त्रीनगर स्थित सूर्यमहल में चातुर्मासिक प्रवचन के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हम सभी सुख के लिए रोते हैं, लेकिन जो दुख मिल रहे हैं, उन्हें अभी भोग लेना चाहिए, क्योंकि अभी हमारे पास बुद्धि, ज्ञान और विवेक है। यदि तिर्यंच गति में चले गए तो उन कष्टों को सहना बहुत पीड़ादायक होगा। हमारी आत्मा अनंत शक्तियों का पुंज है और ''जीवंत'' नाम की शक्ति के कारण हम जीवित हैं। विषय-भोग और भोजन सुख तो देते हैं, लेकिन जीवन नहीं देते। हम अपनी आंतरिक शक्ति के कारण जीवित हैं। उन्होंने कहा कि शक्ति दो प्रकार की होती है—सुप्त और जागृत। हमें ज्ञान नाम की शक्ति को जागृत करना है। सम्यक दृष्टि वाला जीव जानता है कि वह किस कारण जीवित है, जबकि मिथ्या दृष्टि वाला जीव मानता है कि वह परिग्रह, दौलत और भोजन के कारण जीवित है। हमारे भीतर ''जीवंत'' नाम की शक्ति अनंत काल से विद्यमान है, इसीलिए आत्मा अजर-अमर है। सिद्ध भगवान अजर-अमर और अविनाशी होते हैं। तीर्थंकर के पास सर्वश्रेष्ठ दर्शन शक्ति होने के कारण वे पूरे विश्व को देख सकते हैं।

5 सितंबर को "इंदौर स्तरीय वृहद महिला सम्मेलन" का भव्य आयोजन, तैयारियां जोरों पर

आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में होगा आयोजन

इंदौर. शाबाश इंडिया

पूज्य आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में दिगम्बर जैन समाज सामाजिक संसद एवं महिला प्रकोष्ठ की ओर से इंदौर की महिलाओं के सम्मान एवं सशक्तीकरण के उद्देश्य से शनिवार, 5 सितंबर 2026 को दोपहर 1:30 बजे से नेमीनगर जैन कॉलोनी स्थित "घूंघट गार्डन" में "इंदौर स्तरीय वृहद महिला सम्मेलन" का आयोजन किया जाएगा। महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष अनामिका बाकलीवाल एवं प्रतिभा जैन ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजसेवी धीरेन्द्र कुमार सिंह कासलीवाल होंगे। आयोजन का उद्देश्य महिलाओं की प्रतिभा को मंच प्रदान करने के साथ भारतीय संस्कृति एवं संयुक्त परिवार की परंपरा को प्रोत्साहित करना है।

विविध प्रतियोगिताएं एवं संयोजक

दिगम्बर जैन समाज के प्रचार प्रमुख सतीश जैन एवं रुचि चौबीसिया ने बताया कि सम्मेलन में विभिन्न श्रेणियों में प्रतियोगिताएं एवं सम्मान समारोह आयोजित किए जाएंगे।

मिसेस शेफ कॉम्पिटिशन: यलो थीम व्यंजन, स्वाद एवं प्रस्तुति। संयोजकः मनाली तलाटी, प्रीति जैन, सरिता काला, सुनीता अजमेरा एवं दीपाली पाटनी।

प्रतिभा सम्मान: प्रशासन, शिक्षा, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं का सम्मान। संयोजकः ज्योति सेठी, श्वेता काला, रुचि चौबीसिया जैन, आंचल जैन एवं आभा गंगवाल।

संयुक्त परिवार अभिनंदन: 3 या अधिक भाइयों का एकल रसोई परिवार। संयोजकः माधुरी जैन, उषा डोसी, मीरा जैन, ऋतु काला एवं लीना जैन।

माता-पिता सम्मान – 45 वर्ष तक की आयु में 3 या अधिक संतान वाले दंपतियों का सम्मान। संयोजकः तृप्ति जैन, शिवांगी जैन, रमा जैन, नीलू जैन एवं सपना पापड़ीवाल।

आर्या परिवेशन – साड़ी ड्रेपिंग फैशन शो एवं प्रतियोगिता, 18 से 50 वर्ष की महिलाओं के लिए। संयोजकः प्रीति गांधी, ऋतिका जैन, संजना जैन, नीता जैन एवं पूजा बाकलीवाल।

कुशल समन्वय एवं आयोजन व्यवस्था

कार्यक्रम का समन्वय कोऑर्डिनेटर आयुषी बाकलीवाल, ज्योति सेठी, मधु जैन एवं स्मिता गंगवाल माधुरी जैन द्वारा किया जा रहा है।

सामाजिक संसद एवं महिला प्रकोष्ठ के नेतृत्व में अध्यक्ष विनय बाकलीवाल, महामंत्री देवेन्द्र सोगानी, कोषाध्यक्ष पिंकेश टोंग्या, संगठन मंत्री जैनेश झांझरी एवं महिला प्रकोष्ठ के पदाधिकारी आयोजन की व्यवस्थाओं में जुटे हुए हैं।

युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष महावीर जैन, महामंत्री चिंतन जैन तथा कोर कमेटी के राजकुमार पाटोदी, नरेन्द्र वेद, कैलाश वेद, सुरेन्द्र बाकलीवाल, निर्मल सेठी, मुकेश टोंग्या, डी.के. जैन, सौरभ पाटोदी, ऋषभ पाटनी, कमलेश कासलीवाल, सतीश जैन (इलाहाबाद बैंक), मनीष अजमेरा, संजय जैन, राजेश जैन, मनोज सेठी, अनिल जैन (जैनको) एवं सुदीप जैन भी आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय रूप से जुटे हुए हैं। विशेष सहयोगी के रूप में इंद्रपुरी चातुर्मास कमेटी के अध्यक्ष कैलाश लुहाड़िया, महामंत्री डॉ. गिरीश पाटौदी, मुख्य संयोजक इंद्रकुमार सेठी एवं सहसंयोजक संदीप गंगवाल का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। आयोजन समिति एवं सकल दिगम्बर जैन समाज, इंदौर ने शहर की सभी महिलाओं से इस गरिमामय आयोजन में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने का आह्वान किया है। कार्यक्रम में महिला संगठन, परिषद, महासमिति, पुलक चेतना मंच सहित विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों की उपस्थिति रहेगी। कार्यक्रम के अंत में सभी धर्मप्रेमी बंधुओं के लिए वात्सल्य भोज का आयोजन किया जाएगा। उक्त जानकारी सतीश जैन ने दी।

सतीश जैन (इलाहाबाद बैंक): प्रचार प्रमुख
दिगम्बर जैन समाज सामाजिक संसद, इंदौर

जैन विश्वभारती संस्थान में "जैन शिक्षण संस्थान परिसंवाद 2026" का आयोजन

आधुनिक तकनीक के साथ जैन ज्ञान-परंपरा के समन्वय की आवश्यकता : प्रो. बच्छराज दूगड़

लाडनूं. शाबाश इंडिया

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के तत्वावधान में "जैन शिक्षण संस्थान परिसंवाद 2026" का आयोजन किया गया। परिसंवाद का मुख्य विषय "जैन अध्ययन का भविष्य एवं जैन संस्थाओं की भूमिका : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में" रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने की। मुख्य अतिथि श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के प्राचार्य डॉ. शांति कुमार पाटिल तथा विशिष्ट अतिथि जैन एकेडमी ऑफ स्कॉलर्स (जेएएस), अहमदाबाद के संयुक्त सचिव डॉ. अनिल कुमार जैन रहे। विषय-प्रवर्तन डॉ. समणी अमल प्रज्ञा ने किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. बच्छराज दूगड़ ने जैन अध्ययन को नई पीढ़ी तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने, शोध को प्रोत्साहित करने तथा आधुनिक तकनीक के साथ जैन ज्ञान-परंपरा के समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि बदलते समय के अनुरूप जैन अध्ययन को नई तकनीकों एवं शोध पद्धतियों से जोड़ना आवश्यक है, ताकि जैन ज्ञान-परंपरा को व्यापक स्तर पर नई पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके। वक्ताओं ने जैन दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं अहिंसा की समकालीन प्रासंगिकता तथा जैन अध्ययन की भावी संभावनाओं पर विचार व्यक्त किए। मंगल गान के पश्चात अतिथि सम्मान एवं परिचय का क्रम हुआ। परिसंवाद के दौरान जैन अध्ययन, जैन संस्कृति के संवर्धन, चरित्र निर्माण एवं अहिंसा जैसे विषयों पर विभिन्न सत्र आयोजित किए गए। इन सत्रों में विद्वानों एवं प्रतिभागियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए तथा जैन अध्ययन को अधिक प्रभावी एवं प्रासंगिक बनाने के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।

जैन धर्म के इतिहास में 900 वर्ष बाद ज्ञान का अनूठा अनुष्ठान

'प्रतिष्ठा शिरोमणि' ग्रंथ कार्यशाला 3 से 9 सितंबर तक कारीटोरन अतिशय क्षेत्र में

घुवारा. शाबाश इंडिया

जैन धर्म की प्राचीन प्रतिष्ठा परंपरा एवं ग्रंथों के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत जैन अतिशय क्षेत्र कारीटोरन में 'प्रतिष्ठा शिरोमणि' ग्रंथ कार्यशाला का आयोजन 3 से 9 सितंबर 2026 तक किया जा रहा है। आयोजन का उद्देश्य प्राचीन एवं अप्रकाशित प्रतिष्ठा ग्रंथों का शोधपरक अध्ययन कर आगम सम्मत प्रतिष्ठा विधि को व्यवस्थित रूप से समाज के सामने लाना है। मीडिया प्रभारी भरत सेठ घुवारा ने बताया कि कार्यशाला के मुख्य संचालक प्रतिष्ठाचार्य पं. महेश कुमार जी, डीमापुर हैं। उन्हें प्रतिष्ठा शिरोमणि ग्रंथ के संग्रहकर्ता, वर्तमान पंचांग के प्रथम गणितकर्ता, ज्योति भूषण तथा बुंदेलखंड में धातु सहस्त्रकूट जिनालय के निर्माणकर्ता के रूप में जाना जाता है। उन्होंने कारीटोरन अतिशय क्षेत्र को व्यापक स्तर पर पहचान दिलाने के साथ प्रतिष्ठा ग्रंथों को सहज रूप में प्रस्तुत करने का कार्य किया है। उन्हें देशभर में 70 से अधिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं का अनुभव रहा है। कार्यशाला में उत्तर एवं दक्षिण भारत सहित देशभर के 300 से अधिक विद्वान एवं प्रतिष्ठाचार्य शामिल होंगे। आयोजन के माध्यम से समाज को प्रतिष्ठा विधि से संबंधित ऐसा ग्रंथ उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है, जिसमें प्रत्येक क्रिया को प्रमाण एवं विधि सहित प्रस्तुत किया जाएगा। कार्यशाला के दौरान अतिशय क्षेत्र के प्रांगण में एक विशाल शिलालेख भी स्थापित किया जाएगा, जिसमें इस ऐतिहासिक कार्यशाला की गाथा को संरक्षित किया जाएगा।

प्राचीन ग्रंथों का शोधपरक अध्ययन

कार्यशाला में 20 हस्तलिखित ताड़पत्रीय एवं 21 प्रकाशित ग्रंथों का गहन शोधपरक अध्ययन किया जाएगा। ये ग्रंथ पूवाचार्यों एवं विद्वानों द्वारा प्रणीत बताए गए हैं। आयोजन समिति का उद्देश्य ऐसे अप्रकाशित प्रतिष्ठा ग्रंथों का विधिवत प्रकाशन करना भी है। कार्यशाला के आयोजकों के अनुसार लगभग 5वीं से 13वीं शताब्दी तक की परंपरा से जुड़े ग्रंथों के अध्ययन एवं तुलनात्मक शोध के आधार पर ''प्रतिष्ठा शिरोमणि'' ग्रंथ का संकलन एवं परिमार्जन किया जा रहा है। इसका उद्देश्य समाज को आगम सम्मत प्रतिष्ठा विधि उपलब्ध कराना है। कार्यशाला के बाद आगम के विशेषज्ञों तथा मुनि-आचार्यों के मार्गदर्शन में प्रतिष्ठाचार्य दीक्षा के संस्कारों से प्रशिक्षित प्रतिष्ठाचार्य तैयार करने का भी लक्ष्य रखा गया है।

पंथवाद एवं संघवाद से मुक्त प्रतिष्ठा विधि पर जोर

आयोजन समिति के अनुसार कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य प्रतिष्ठा विधि में पंथवाद या संघवाद के कारण होने वाले अनावश्यक बदलावों को रोकना तथा प्रामाणिक एवं आगम सम्मत विधि को संरक्षित करना है। आयोजकों ने श्रद्धालुओं एवं विद्वानों से इस ऐतिहासिक आयोजन में सहभागी बनने और जैन धर्म की प्राचीन ज्ञान-परंपरा के संरक्षण में सहयोग करने का आह्वान किया है।

आयोजन समिति

कार्यशाला के अध्यक्ष अष्टापद तीर्थ प्रणेता पं. बाल ब्रह्मचारी धर्मचंद जी शास्त्री, दिल्ली, कुलपति पं. महेंद्र कुमार जी व्याकरणाचार्य, प्राचार्य, मुरैना, संयोजक प्रज्ञा पथगामी बाल ब्रह्मचारी अरुण भैया सुधांशु तथा मुख्य सूत्रधार मंच मार्तंड बाल ब्रह्मचारी आशीष भैया पुण्यांश हैं। प्रतिष्ठाचार्य के रूप में अखिलेश जी शास्त्री, सुप्रज्ञ, रमगढ़ा एवं सिंघई आयुष मोतीबाला, जबलपुर का सहयोग रहेगा। यह आयोजन भारतवर्षीय दिगम्बर जैन आगम मार्गी विद्वत समिति के तत्वावधान एवं श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कारीटोरन के आयोजकत्व में किया जा रहा है। मुख्य संचालन प्रतिष्ठाचार्य पं. महेश कुमार जी, डीमापुर द्वारा किया जाएगा।

200 विद्वानों के स्वागत से होगा शुभारंभ

''ज्ञान की ज्योति से अज्ञान का नाश, जिनशासन का हो उज्ज्वल विकास'' के संदेश के साथ कार्यशाला के प्रथम सत्र का शुभारंभ करीब 200 विद्वानों के स्वागत एवं सम्मान के साथ होगा। कार्यशाला में डॉ. अखिलेश जैन एवं श्रीमती ग्रीष्मा परिवार, इंदौर; भूपेंद्र कुमार एवं श्रीमती ऋतु, भिवाड़ी; क्रांति प्रसाद एवं श्रीमती प्रभा छावड़ा, डीमापुर; सुमेर-विमला छावड़ा, किशनगढ़; लबेइन गोधा, जयपुर; संजीव जैन-मनीषा, लखनऊ; श्रीमती सावित्री-मुकेश सिंघई; मीना सिंघई, दमोह; कमल कुमार-नरेश कुमार चांदवाड, रामगंज मंडी; त्रिलोक चंद्र-भूपेंद्र कुमार सांवला, रामगंज मंडी; सुखानंद जैन-ऋषभ जैन, सुंदर विहार, दिल्ली; अंकित ट्रेडर्स, साढूमर तथा अरविंद जैन, गोना-मड़ावरा सहित अनेक श्रावक श्रेष्ठियों ने सहयोग प्रदान किया है। देशभर के अनेक विद्वानों ने भी आयोजन के लिए आर्थिक सहयोग दिया है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय मंत्री एवं आदिनाथ चैनल के डायरेक्टर पवन कुमार गोधा, दिल्ली द्वारा ध्वजारोहण किया जाएगा। श्री दिगम्बर जैन ग्लोबल महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमनालाल हपावत, मुंबई ने भी विशेष आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। आयोजकों के अनुसार देश के विभिन्न प्रांतों से अनेक विद्वानों एवं प्रमुख व्यक्तियों के इस आयोजन में शामिल होने की सूचना प्राप्त हो रही है। आयोजन समिति द्वारा आगंतुकों के लिए आवास, भोजन, वाहन एवं सुरक्षा सहित अन्य व्यवस्थाएं की गई हैं।

तप तन से नहीं, मन से होता है; मन मजबूत हो तो साधना पूरी : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

30 उपवास की मासखमण साधना पूर्ण, श्रीसंघ ने तप-पुरुषार्थ की अनुमोदना कर किया बहुमान

त्रिदिवसीय शिविर के समापन पर महिलाओं ने पर्युषण में तप-त्याग बढ़ाने का लिया संकल्प

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। तप शरीर को कष्ट देने के लिए नहीं, बल्कि मन को दृढ़ और जीवन को शुद्ध बनाने के लिए है। कठिनाई तन को होती है, लेकिन तप को निभाने की ताकत मन देता है। मन तैयार हो तो तप साधना बनता है और वही साधना भीतर के कर्मों को क्षीण करने का मार्ग खोलती है। व्यावहारिक धर्म हो या पारमार्थिक, दोनों में तप का समान स्थान है और इसकी महत्ता स्वयं स्पष्ट है। यह विचार श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने शांतिभवन में आयोजित विशाल धर्मसभा में तप की वास्तविक साधना और उसके मर्म को स्पष्ट करते हुए व्यक्त किए। युवाचार्यश्री ने कहा कि व्यावहारिक धर्म में दान, शील, तप और भाव हैं, जबकि पारमार्थिक धर्म में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। दोनों में तप एक समान तत्व है। धर्म व्यवहार से आगे बढ़े या परमार्थ की दिशा में, तप उसके साथ जुड़ा हुआ है। जैसे खदान में मिट्टी के भीतर मूल्यवान धातु प्राप्त करने की क्षमता होती है, वैसे ही व्यावहारिक धर्म में भी साधक को आगे बढ़ाने की क्षमता होती है। पारमार्थिक अवस्था में ज्ञान भावों को जानता है, दर्शन श्रद्धा प्रदान करता है, चारित्र स्वयं पर नियंत्रण रखता है और तप आत्मशुद्धि करता है।

पुराने लैपटॉप-डेस्कटॉप बनेंगे और भी पावरफुल, JioPC देगा 16GB RAM और 1TB तक स्टोरेज

सभी इंटरनेट यूजर्स के लिए उपलब्ध, 8 साल पुराने कंप्यूटर को भी AI-ready बनाने का दावा, प्लान 1,000 ₹ से शुरू

नई दिल्ली

पुराना लैपटॉप या डेस्कटॉप स्लो हो गया है तो तुरंत नया खरीदने की जरूरत शायद न पड़े। रिलायंस जियो का JioPC आपके पुराने कम्प्यूटर को क्लाउड की ताकत से ज्यादा पावरफुल बनाएगा। यूजर अपने मौजूदा लैपटॉप या डेस्कटॉप पर 16GB तक RAM और 1TB तक स्टोरेज एक्सेस कर सकेंगे, वह भी बिना नया हार्डवेयर खरीदे। JioPC की सर्विस, एक स्टैंडअलोन सब्सक्रिप्शन के तौर पर कोई भी इंटरनेट यूजर ले सकता है। यानी इंटरनेट कनेक्शन किसी भी टेलीकॉम या ब्रॉडबैंड कंपनी का हो, JioPC इस्तेमाल किया जा सकेगा। कंपनी के मुताबिक इसे पांच मिनट से भी कम समय में एक्टिव किया जा सकता है। इसके लिए न डेटा माइग्रेशन की जरूरत है और न नया हार्डवेयर लगाने की। बताते चलें कि पहले JioPC सिर्फ जियो होम ब्रॉडबैंड ग्राहकों तक सीमित था। जियो का दावा है कि JioPC पुराने कंप्यूटर को इतना पावरफुल बना सकता है कि AI से जुड़ी भारी प्रोसेसिंग और स्टोरेज की जरूरतें भी आसानी से पूरी की जा सकें। इसके लिए कंप्यूटिंग का बड़ा हिस्सा JioPC के क्लाउड पर होगा। कंपनी के मुताबिक 8 साल पुराना कंप्यूटर भी आज के AI-पॉवर्ड ऐप्स के लिए जरूरी परफॉर्मेंस, स्टोरेज और क्षमताएं हासिल कर सकता है। JioPC के प्लान ₹ 1,000 से शुरू होंगे। 8GB RAM और 500GB स्टोरेज वाला दो महीने का प्लान ₹ 1,000 में मिलेगा, जबकि 16GB RAM और 1TB स्टोरेज वाले JioPC Ultra की कीमत दो महीने के लिए ₹ 1,200 है। पांच महीने के प्लान क्रमशः ₹ 2,000 और ₹ 2,500 में मिलेंगे। वहीं 12 महीने यानी 10+2 महीने के प्लान की कीमत ₹ 4,000 और ₹ 5,000 रखी गई है। सभी कीमतों में GST शामिल है। JioPC क्लाउड पर चलता है, इसलिए इसके लिए अच्छा और स्थिर इंटरनेट कनेक्शन जरूरी होगा। ब्रॉडबैंड के अलावा भरोसेमंद 4G या 5G कनेक्शन पर भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

2027 की जनगणना में जैन समाज की सटीक गणना के लिए मुनि श्री सुधासागर जी महाराज का मिला मंगल आशीर्वाद

राष्ट्रीय जिनशासन एकता संघ ने जन-जागरूकता अभियान की रूपरेखा पर की चर्चा

इंदौर। आगामी 2027 की जनगणना में जैन समाज की सही जनसंख्या दर्ज कराने और सकल जैन समाज को जनगणना के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय जिनशासन एकता संघ की ओर से एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक छत्रपति नगर, इंदौर में परम पूज्य निर्यापक मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज के पावन सानिध्य में सम्पन्न हुई। बैठक में मुनि श्री सुधासागर जी महाराज ने समाजजनों को संबोधित करते हुए कहा कि आगामी जनगणना में समाज के प्रत्येक व्यक्ति एवं परिवार की सटीक और सही जानकारी दर्ज कराना अत्यंत आवश्यक है, ताकि जैन धर्मावलंबियों की वास्तविक संख्या एवं समाज की पहचान स्पष्ट रूप से सामने आ सके।

जन-जागरूकता अभियान की रूपरेखा तय

राष्ट्रीय जिनशासन एकता संघ के अध्यक्ष राकेश गोहिल एवं उपाध्यक्ष टी.के. वेद ने बताया कि बैठक में जनगणना के दौरान जैन धर्मावलंबियों की सही गणना सुनिश्चित करने तथा समाज में व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाने की रणनीति पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में इस बात पर जोर दिया गया कि जनगणना के महत्व की जानकारी समाज के प्रत्येक परिवार तक पहुंचाई जाए और लोगों को सही जानकारी दर्ज कराने के लिए प्रेरित किया जाए।

मंजिल निश्चित हो, तभी जीवन की यात्रा सार्थक होगी

लक्ष्य, पुरुषार्थ और आत्मनिरीक्षण के साथ गुरु के मार्गदर्शन का महत्व बताया

इंदौर. शाबाश इंडिया। दलाल बाग स्थित विद्या सुधा देशना मंडप में आयोजित धर्मसभा में मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने प्रवचन देते हुए जीवन में लक्ष्य, पुरुषार्थ, आत्मनिरीक्षण और गुरु के महत्व पर प्रेरणादायी मार्गदर्शन दिया। मुनिश्री ने कहा कि किसी भी कार्य की सफलता के लिए सबसे पहले लक्ष्य निश्चित होना चाहिए। केवल रास्ता जानना पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह भी पता होना चाहिए कि जाना कहां है। उन्होंने कोल्हू के बैल का उदाहरण देते हुए कहा कि वह दिनभर चलता है और उसका शरीर थक जाता है, लेकिन वह अपनी मंजिल तक नहीं पहुंचता। यही स्थिति उस व्यक्ति की है, जो जीवनभर मेहनत करता है, लेकिन अपने लक्ष्य को निश्चित नहीं करता। महाश्रमण ने कहा कि परिवार, नौकरी या समाज में बार-बार यह सोचना कि मैंने इतना किया, मुझे क्या मिला? व्यक्ति के पुरुषार्थ को कमजोर कर देता है। इसके बजाय स्वयं से पूछना चाहिए कि मैं क्या बन रहा हूं? और मेरी मंजिल के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा क्या है? अपनी कमजोरी, मोह, भय, अहंकार, अपेक्षा और कषाय का ईमानदारी से आत्मनिरीक्षण आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गुरु के सामने बिल्कुल बालक बन जाइए। जो अनुभव हो रहा है, उसे सच-सच बताइए। जिस प्रकार डॉक्टर से बीमारी छिपाने पर सही उपचार नहीं हो सकता, उसी प्रकार गुरु से अपने दोष और अनुभव छिपाने पर आत्मिक उपचार भी संभव नहीं है। मुनिश्री ने आगे कहा कि शरीर की थकान विश्राम से दूर हो सकती है, लेकिन मन की हार व्यक्ति को भीतर से तोड़ देती है। मन से हारा व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में सचेत होकर आगे नहीं बढ़ पाता।

जैन धर्मावलंबियों ने मनाया चन्दन षष्ठी पर्व (चांदन छठ)

महिलाओं ने किया निर्जला उपवास, जैन मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना एवं धार्मिक आयोजन

3 सितंबर को मनाया जाएगा भगवान शांतिनाथ का गर्भ कल्याणक महोत्सव, 13 सितंबर को घर-घर मनेगी रोट तीज

जयपुर. शाबाश इंडिया

गत वर्ष अशुद्धि के माध्यम से हुए पापबंध के निवारण के लिए जैन महिलाओं सहित श्रावक-श्राविकाओं ने बुधवार को चन्दन षष्ठी (चांदन छठ) पर्व मनाया। इस अवसर पर शहर के 225 से अधिक दिगम्बर जैन मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना की गई। उपवास करने वाले श्रावक-श्राविकाओं ने चन्दन षष्ठी व्रत की कथा का वाचन एवं श्रवण किया। राजस्थान जैन सभा जयपुर के उपाध्यक्ष विनोद जैन ''कोटखावदा'' के अनुसार श्रावक-श्राविकाओं ने चन्दन षष्ठी के अवसर पर चांदन छठ (षष्ठी) व्रत किया। पं. प्रद्युम्न जैन शास्त्री ने बताया कि वर्षभर में स्वयं द्वारा अशुद्धि के माध्यम से हुए पापबंध के निराकरण के लिए चन्दन षष्ठी व्रत किया जाता है। विनोद जैन के अनुसार यह व्रत भाद्रपद कृष्ण षष्ठी को किया जाता है। परिवार के 8 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक सदस्य द्वारा अपनी सामर्थ्य के अनुसार यह व्रत किया जाता है। शहर के विभिन्न मंदिरों में श्रद्धालुओं ने उपवास एवं एकासन के माध्यम से व्रत किया।

मंदिरों में हुई विशेष पूजाएं: चन्दन षष्ठी व्रत के अवसर पर दिगम्बर जैन मंदिरों में 6 पूजाएं की गईं। इनमें समुच्चय पूजा अथवा नवदेवता पूजा, चौबीस तीर्थंकर भगवान की पूजा, मूलनायक भगवान की पूजा, भगवान चंद्रप्रभु की पूजा, भगवान नेमिनाथ की पूजा एवं भगवान महावीर स्वामी की पूजा शामिल रही। जहां इन तीन तीर्थंकरों में से कोई मूलनायक भगवान विराजमान हैं, वहां सिद्ध भगवान की पूजा भी की गई। विनोद जैन कोटखावदा के अनुसार पूजा के बाद चन्दन षष्ठी व्रत के जाप किए गए। इनमें णमोकार महामंत्र की 1 माला के बाद ''ॐ ह्रीं अनंतानंत श्री परम सिद्धेभ्यो नमो नमः'' की 1 माला, ''ॐ ह्रीं अर्हम् श्री चंद्रप्रभ जिनेंद्राय नमः'' की 1 माला तथा ''ॐ ह्रीं अर्हम् श्री अरिष्ट नेमिनाथ जिनेंद्राय नमः'' की 1 माला का जाप किया गया। श्रावक-श्राविकाओं ने धर्ममय दिन बिताते हुए व्रत, पूजा एवं जाप के माध्यम से अपने जीवन को सार्थक किया। महिलाओं ने चन्दन षष्ठी व्रत की कथा का श्रवण भी किया। विनोद जैन के अनुसार अपवित्र अवस्था में किसी मुनिराज को आहार देने, मंदिर की किसी वस्तु को छूने तथा रजस्वला अवस्था में मायाचारीपूर्वक धर्मलाभ के लोभ से कोई धार्मिक क्रिया करने आदि से हुए पापों के प्रायश्चित के लिए जैन श्रद्धालुओं द्वारा यह व्रत किया जाता है।

तारों की कूट में हुआ विशेष आयोजन

तारों की कूट स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दीपिका जैन कोटखावदा के नेतृत्व में अष्टद्रव्य से चन्दन षष्ठी व्रत की विशेष पूजा-अर्चना की गई। मंत्रोच्चार के साथ श्रद्धापूर्वक अर्घ्य अर्पित किए गए। इस अवसर पर दीपिका जैन कोटखावदा, नीरु छाबड़ा, प्रमिला पाटनी, मृदुला सरणका, सीमा बाकलीवाल सहित बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल हुईं। पूजा के समापन पर चन्दन षष्ठी व्रत के जाप किए गए तथा आरती के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। इस दौरान चन्दन षष्ठी व्रत कथा का वाचन भी किया गया।

3 सितंबर को भगवान शांतिनाथ का गर्भ कल्याणक

राजस्थान जैन सभा जयपुर के उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि गुरुवार, 3 सितंबर को जैन धर्म के 16वें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ का गर्भ कल्याणक महोत्सव मनाया जाएगा। इस अवसर पर दिगम्बर जैन मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना एवं धार्मिक आयोजन होंगे। उन्होंने बताया कि शुक्रवार, 11 सितंबर से रविवार, 13 सितंबर तक लब्धिविधान तेला तथा रविवार, 13 सितंबर को रोट तीज एवं चौबीसी व्रत मनाया जाएगा।

15 सितंबर से शुरू होगा दशलक्षण महापर्व

विनोद जैन ने बताया कि मंगलवार, 15 सितंबर से दशलक्षण महापर्व प्रारंभ होगा, जो शुक्रवार, 25 सितंबर तक चलेगा। इस दौरान शहर के दिगम्बर जैन मंदिरों में पूजा-पाठ एवं विभिन्न धार्मिक आयोजनों की धूम रहेगी। जैन धर्म में उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम सत्य, उत्तम शौच, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य एवं उत्तम ब्रह्मचर्य– इन 10 को दशलक्षण धर्म कहा गया है। इन 10 दिनों में प्रातःकाल जैन मंदिरों में अभिषेक, शांतिधारा, सामूहिक पूजा, मुनिराजों की विशेष प्रवचन श्रृंखला, श्रावक संस्कार साधना शिविर, महाआरती तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। धर्मावलंबी अपनी क्षमता एवं श्रद्धानुसार 3, 5, 8, 10, 16, 32 दिन सहित अलग-अलग अवधि के उपवास करते हैं। उपवास के दौरान निराहार रहकर केवल एक समय पानी ग्रहण करने की परंपरा भी अनेक श्रद्धालुओं द्वारा निभाई जाती है।

विनोद जैन कोटखावदाः उपाध्यक्ष
राजस्थान जैन सभा, जयपुर

अमृत फल नारियल और विलुप्त होते कल्पतरु पर परिचर्चा

नारियल दिवस पर बहुउपयोगी वृक्ष के संरक्षण और कल्पतरु के विस्तार पर हुई चर्चा

खूंटी. कासं। पृथ्वी लोक तरु संस्थान के तत्वावधान में बुधवार शाम भगतसिंह चौक पर नारियल दिवस के अवसर पर परिचर्चा आयोजित की गई। इसमें नारियल के महत्व के साथ-साथ विलुप्त होते कल्पतरु के संरक्षण एवं अधिक से अधिक पौधारोपण पर समसामयिक चर्चा हुई। पृथ्वी लोक तरु संस्थान के अध्यक्ष डॉ. दीपक कुमार घोष ने कहा कि नारियल एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्यवर्धक पेय एवं खाद्य पदार्थ है। इसका उत्पादन दक्षिण भारत के साथ पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों में भी होता है। खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग के अलावा नारियल से तेल भी प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि दुर्लभ देववृक्ष कल्पतरु रांची में मौजूद है, जिसके संरक्षण एवं विस्तार की दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए। मुरहू के प्रकृति प्रेमी डॉ. धर्मेंद्र नाथ तिवारी ने कहा कि नारियल स्वास्थ्य के साथ-साथ अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि देवलोक का वृक्ष माने जाने वाले कल्पतरु का संरक्षण भी जरूरी है। युवा ध्रुवेन्द्र भास्कर ने कहा कि नारियल को अक्सर ''जीवन का वृक्ष'' कहा जाता है, क्योंकि इसके फल, पानी, तेल, रेशा और खोल तक विभिन्न कार्यों में उपयोग किए जाते हैं।

संतोष बम्ब ने संभाला ह्यूमन ग्लोरी वुमेन्स क्लब के सचिव पद का दायित्व

संगठनात्मक गतिविधियों को मिलेगी नई ऊर्जा और दिशा

जयपुर. शाबाश इंडिया। ह्यूमन ग्लोरी वुमेन्स क्लब के संगठनात्मक विस्तार एवं सामाजिक गतिविधियों को और अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए श्रीमती संतोष बम्ब ने क्लब के सचिव पद का विधिवत दायित्व संभाल लिया। इस अवसर पर क्लब की पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने उनका आत्मीय स्वागत करते हुए नए दायित्व के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन ट्रस्ट के फाउंडर प्रेसिडेंट प्रमोद जैन भंवर ने श्रीमती संतोष बम्ब को सचिव पद का दायित्व सौंपते हुए कहा कि उनका अनुभव, नेतृत्व क्षमता, कार्यकुशलता, सकारात्मक सोच एवं सामाजिक सरोकारों के प्रति समर्पण संगठन के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा। उनके मार्गदर्शन और सक्रिय सहभागिता से ह्यूमन ग्लोरी वुमेन्स क्लब को नई ऊर्जा और नई दिशा मिलेगी। क्लब की अध्यक्ष मनीषा जैन 'कुसुम' ने कहा कि श्रीमती संतोष बम्ब का सचिव पद का दायित्व संभालना क्लब के लिए प्रसन्नता और गौरव का विषय है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि संतोष बम्ब के अनुभव, समर्पण एवं संगठनात्मक क्षमता से क्लब की गतिविधियों को नई गति मिलेगी और महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में संस्था और अधिक प्रभावी भूमिका निभाएगी। उन्होंने कहा कि ह्यूमन ग्लोरी वुमेन्स क्लब एक परिवार की तरह कार्य करता है, जहां प्रत्येक सदस्य की सहभागिता और योगदान संस्था की शक्ति है। संतोष बम्ब के सचिव पद संभालने से संगठनात्मक शक्ति और अधिक मजबूत होगी तथा सामाजिक सेवा के नए आयाम स्थापित किए जाएंगे। श्रीमती संतोष बम्ब ने सचिव पद की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपने के लिए ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन ट्रस्ट के फाउंडर प्रेसिडेंट प्रमोद जैन भंवर, क्लब की अध्यक्ष मनीषा जैन ह्यकुसुमह्व सहित सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि वे संस्था के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों के अनुरूप पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी और समर्पण के साथ अपने दायित्व का निर्वहन करेंगी। साथ ही, सभी सदस्यों के सहयोग से क्लब को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का हरसंभव प्रयास करेंगी। इस अवसर पर क्लब की पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहीं। सभी ने श्रीमती संतोष बम्ब को सचिव पद की नई जिम्मेदारी के लिए हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल एवं सफल कार्यकाल की शुभकामनाएं दीं।

श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, इंजीनियर्स कॉलोनी में हुआ भव्य गोद भराई कार्यक्रम

25 अक्टूबर को दिल्ली में आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज के सानिध्य में होगी दीक्षा

जयपुर. शाबाश इंडिया। आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज के सानिध्य में 25 अक्टूबर को नई दिल्ली स्थित लाल मंदिर में होने वाली दीक्षा के दीक्षार्थी भैया की भव्य गोद भराई का कार्यक्रम श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, इंजीनियर्स कॉलोनी में आयोजित किया गया। इस अवसर पर समाज के गणमान्य लोगों कमल चंद छाबड़ा, अनिल बोहरा, प्रकाश सेठी, सुमित छाबड़ा, मीना जैन, रेणु पाटनी सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे। संघस्थ ब्रह्मचारी अक्षय भैया ने बताया कि दीक्षार्थी अंकुर भैया, अंकित भैया, यश भैया, प्रसन्न भैया एवं वकील चंद भैया की दीक्षा 25 अक्टूबर को दिल्ली के लाल मंदिर में पट्टाचार्य विशुद्धसागर जी महाराज के करकमलों से होगी। कार्यक्रम के दौरान समाजजनों ने दीक्षार्थियों के संयम मार्ग की अनुमोदना करते हुए उनके उज्ज्वल आध्यात्मिक जीवन की मंगलकामना की।

वार्ड 31 के जय कुमार जैन का समाजश्रेष्ठियों ने किया सम्मान

प्रमुख समाजजनों ने दिया पूर्ण समर्थन का आश्वासन, जीत की अग्रिम शुभकामनाएं

जयपुर. शाबाश इंडिया। वार्ड 31 से कांग्रेस के प्रत्याशी एवं समाजसेवी जय कुमार जैन के चुनाव कार्यालय पहुंचकर प्रमुख समाजश्रेष्ठियों ने उनका माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस दौरान समाजजनों ने उन्हें पूर्ण समर्थन देने का आश्वासन देते हुए उनकी जीत के लिए अग्रिम शुभकामनाएं दीं। उल्लेखनीय है कि नेमिसागर, वैशाली नगर निवासी जय कुमार जैन सेवा और सहयोग की भावना के चलते क्षेत्र में काफी लोकप्रिय हैं। सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहने के कारण उन्हें विभिन्न वर्गों का समर्थन मिल रहा है। इस अवसर पर प्रमुख समाजसेवी अशोक जैन नेता, योगेश टोड़रका, महेश बाकलीवाल, भानु छाबड़ा, सुनील जैन, मोहित जैन, विजय बड़जात्या, पूनम चंद जैन सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

दूसरों के दोष नहीं, गुणों को देखें, यही उपगूहन अंग की भावना : आचार्यश्री उदारसागर

कर सको तो आत्म-निंदा करो, पर परनिंदा नहीं

मुरैना (मनोज जैन नायक)। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पंचायती बड़ा मंदिर में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए ज्ञान रत्नाकर परम पूज्य आचार्य श्री 108 उदारसागर महाराज ने उपगूहन अंग की महत्ता बताते हुए कहा कि धर्म के मार्ग पर चलने वाले प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह दूसरों के दोषों को उजागर करने के बजाय उनके गुणों को प्रकट करे। किसी से भूल हो जाए तो उसे अपमानित करने के स्थान पर सही मार्ग दिखाकर सुधार का अवसर देना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा कि जिस प्रकार मार्ग पर चलते समय किसी व्यक्ति से भूल हो जाए तो हमारा दायित्व उसे भटकने देना नहीं, बल्कि सही दिशा दिखाना है। उसी प्रकार मोक्षमार्ग पर चलने वाले साधर्मी से कोई भूल हो जाए तो उसकी निंदा या चर्चा करने के बजाय उसकी भूल को ढककर उसे सुधार का अवसर देना चाहिए। यही उपगूहन अंग की मूल भावना है। उन्होंने कहा कि अपने गुणों को छिपाना और दूसरों के गुणों को प्रकट करना श्रेष्ठ भावना है। इसके विपरीत जो व्यक्ति अपने गुणों का प्रदर्शन करता है और दूसरों के दोषों को उजागर करता है, उसकी यह प्रवृत्ति शुभ परिणाम देने वाली नहीं होती। ऐसी भावना कर्मबंध की दृष्टि से नीच गोत्र कर्म के बंध का कारण बन सकती है। आचार्यश्री ने कहा कि सम्यग्दृष्टि व्यक्ति की दृष्टि दोष खोजने वाली नहीं, बल्कि गुण ग्रहण करने वाली होती है। उन्होंने चुम्बक का उदाहरण देते हुए कहा कि अनेक वस्तुओं के बीच चुम्बक केवल लोहे को अपनी ओर आकर्षित करता है। उसी प्रकार हमें भी संसार में रहते हुए दूसरों के दोष तलाशने के बजाय उनके गुणों को ग्रहण करना चाहिए।

पोते के जन्मदिन को यादगार बनाया, मंदिर प्रांगण में किया पौधरोपण

समाजसेवी पार्षद सुभाष चंद्र की पर्यावरण संरक्षण को समर्पित पहल

ऐलनाबाद (रमेश भार्गव)। स्थानीय तलवाड़ा रोड स्थित श्री बाबा रामदेव मंदिर के प्रांगण में समाजसेवी एवं नगर पार्षद सुभाष चंद्र ने अपने पोते मयंक कक्कड़ के दूसरे जन्मदिन के अवसर पर अनुकरणीय पहल करते हुए पौधरोपण किया। इस विशेष दिन को यादगार बनाने के लिए उन्होंने सामाजिक संस्था टीम मिशन ग्रीन एवं श्री रामाधणी मंदिर कमेटी ट्रस्ट के पदाधिकारियों और सदस्यों के सहयोग से मंदिर परिसर में पौधे लगाए। नगर पार्षद सुभाष चंद्र ने कहा कि परिजनों की खुशी के पलों को केवल औपचारिक समारोहों तक सीमित न रखकर उन्हें पर्यावरण संरक्षण जैसे नेक कार्य से जोड़ना समय की मांग है। पौधरोपण न केवल पर्यावरण को स्वच्छ एवं हरा-भरा रखने में सहायक है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वस्थ एवं सुरक्षित जीवन का मार्ग भी प्रशस्त करता है। इस अवसर पर टीम मिशन ग्रीन एवं श्री रामाधणी मंदिर कमेटी ट्रस्ट के पदाधिकारियों और सदस्यों ने मयंक कक्कड़ को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे बच्चों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ अथवा अन्य पारिवारिक अवसरों पर कम से कम एक पौधा अवश्य लगाएं और उसकी नियमित देखभाल का संकल्प लें। कार्यक्रम में दोनों संस्थाओं के प्रतिनिधियों सहित स्थानीय गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। सभी ने पर्यावरण संरक्षण की इस पहल की सराहना की।

आर्यिका माताजी के सान्निध्य में भक्तिमय हुआ जैन बगीची प्रांगण

35 दिवसीय अनुष्ठान में प्रतिदिन उमड़ रहे श्रद्धालु

मुरैना/अम्बाह (मनोज जैन नायक)

नगर के जैन बगीची प्रांगण में इन दिनों धर्म, भक्ति और आध्यात्मिक साधना का वातावरण बना हुआ है। आचार्य श्री सिद्धांत सागर महाराज की शिष्या परम पूज्य गुरु मां गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री संगममति माताजी ससंघ के मंगल सान्निध्य में चल रहे 35 दिवसीय णमोकार महामंत्र जाप अनुष्ठान में प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल होकर धर्मलाभ ले रहे हैं। मंगलवार को भी जैन बगीची प्रांगण में सामूहिक णमोकार महामंत्र जाप से वातावरण भक्तिमय हो गया। करीब एक घंटे तक श्रद्धालुओं ने एकाग्रचित्त होकर अनुशासनपूर्वक महामंत्र का जाप किया। इस दौरान बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक समाज के सभी वर्गों की सहभागिता रही। अनुष्ठान के अंतर्गत णमोकार महामंत्र की आरती का शुभारंभ श्री आदिनाथ जिनालय से हुआ। श्रद्धालु आरती की थाल लेकर भक्तिभाव के साथ यात्रा में शामिल हुए। आरती यात्रा जश्वर रोड, नगर पालिका, सदर बाजार, दाऊ कोठी एवं परेड चौराहा होते हुए जैन बगीची प्रांगण पहुंची। मार्ग में धार्मिक जयघोष और श्रद्धालुओं के उत्साह से वातावरण भक्तिमय बना रहा। जैन बगीची पहुंचने पर श्रद्धालुओं ने विधि-विधान एवं भक्तिभावपूर्वक श्रीजी की आरती की। आरती के दौरान पूरा प्रांगण धार्मिक आस्था से सराबोर हो गया। इसके बाद श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से णमोकार महामंत्र जाप अनुष्ठान में सहभागिता की।

कपरिया परिवार को मिला आरती का पुण्यार्जन

णमोकार महामंत्र की आरती के पुण्यार्जक बनने का सौभाग्य वीरेंद्र कुमार जैन, श्रीमती मीना जैन, पंकज जैन, श्रीमती रानी जैन, सनी जैन, गर्वित जैन, प्रेक्षा जैन एवं समस्त कपरिया परिवार को प्राप्त हुआ। पुण्यार्जक परिवार के सदस्यों एवं समाजजनों ने श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ आरती में सहभागिता की। सामूहिक जाप के दौरान जैन बगीची प्रांगण णमोकार महामंत्र की मंगल ध्वनि से गूंजता रहा। श्रद्धालुओं ने कहा कि सामूहिक रूप से महामंत्र का जाप करने से मन को शांति मिलती है और वातावरण में सकारात्मकता का अनुभव होता है। गुरु मां संगममति माताजी के ससंघ मंगल सान्निध्य में चल रहे इस 35 दिवसीय अनुष्ठान को लेकर समाजजनों में विशेष उत्साह है। प्रतिदिन जाप, आरती एवं अन्य धार्मिक आयोजनों में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचकर धर्मलाभ ले रहे हैं।

महाविद्यालय परिवार की सोनगढ़ यात्रा

गुरुदेवश्री की साधनाभूमि सोनगढ़ की ओर रवाना हुआ पूरा परिवार

सोनगढ़. शाबाश इंडिया। गुरुभूमि को स्पर्श करने की उत्कंठा और आध्यात्मिक वातावरण को निकट से अनुभव करने के उत्साह के साथ श्री टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का सम्पूर्ण परिवार 2 सितंबर को दोपहर 1 बजे सोनगढ़ यात्रा के लिए रवाना हुआ। ज्ञानतीर्थ से अध्यात्मतीर्थ की यह यात्रा केवल शैक्षणिक भ्रमण नहीं, बल्कि आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की पावन साधनाभूमि को निकट से जानने और उनके आध्यात्मिक प्रभाव को अनुभव करने का अवसर है। यात्रा को लेकर विद्यार्थियों एवं साधर्मियों में विशेष उत्साह है। प्रत्येक यात्री के मन में यह उमंग है कि अगले दिन गुजरात की उस पावन वसुंधरा का दर्शन किया जाए, जहां गुरुदेवश्री की साधना और अध्यात्म की अमिट स्मृतियां आज भी जीवंत हैं। सोनगढ़ पहुंचकर जिनेन्द्र भगवान की पूजन-अर्चना एवं गुरुदेवश्री की अमृतमयी वाणी के श्रवण सहित यात्रा के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

45 वर्षों तक अध्यात्म का शंखनाद

सोनगढ़ वह पावन भूमि है, जहां गुरुदेवश्री ने 45 वर्षों तक अध्यात्म का शंखनाद किया। यहीं से अनेक मुमुक्षुजनों को आत्मा के स्वरूप का बोध कराने वाली अमृतमयी वाणी प्रवाहित हुई। आज भी यहां का वातावरण अध्यात्म की अनुभूति से आलोकित प्रतीत होता है। विद्यार्थियों को इस महान आध्यात्मिक धरोहर से परिचित कराने के उद्देश्य से पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा इस यात्रा का आयोजन किया जा रहा है।

ज्ञान, वैराग्य और भक्ति से ओतप्रोत होंगी गतिविधियां

प्रवास के दौरान आयोजित सभी गतिविधियां ज्ञान, वैराग्य एवं भक्ति से ओतप्रोत रहेंगी। यात्रा के दौरान आध्यात्मिक सत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के आध्यात्मिक प्रवचनों का श्रवण किया जाएगा। इसके साथ ही प्रांगण में स्थित श्री परमागम मंदिर, स्वाध्याय मंदिर, सीमंधर जिनालय, समवशरण जिनालय एवं नंदीश्वर मंदिर आदि के सामूहिक दर्शन किए जाएंगे।

सम्यक दर्शन, ज्ञान और चारित्र के माध्यम से ही आत्मकल्याण का मार्ग : आचार्य आदित्य सागर

जनकपुरी में प्रतिदिन शाम हो रहा छहढाला का वाचन, दो ढाल पूर्ण; तीसरी ढाल के प्रथम पद पर हुआ गहन विवेचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनकपुरी जैन मंदिर में आचार्य श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज के सान्निध्य में प्रतिदिन शाम छहढाला का वाचन एवं आध्यात्मिक विवेचन किया जा रहा है। इसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित होकर छहढाला के माध्यम से आत्मकल्याण एवं मोक्षमार्ग के गूढ़ सिद्धांतों को समझ रहे हैं। श्रेष्ठी पदम जैन बिलाला के अनुसार, आचार्यश्री द्वारा छहढाला की दो ढालों का वाचन पूर्ण कराया जा चुका है और वर्तमान में तीसरी ढाल का वाचन चल रहा है। मंगलवार को आचार्यश्री ने तीसरी ढाल के प्रथम पद का भावपूर्ण विवेचन करते हुए उसके आध्यात्मिक मर्म को सरल भाषा में समझाया। उन्होंने बताया कि छहढाला के प्रत्येक पद में आत्मा के स्वरूप, संसार की वास्तविकता तथा सम्यक्दर्शन, ज्ञान और चारित्र के माध्यम से आत्मकल्याण का मार्ग बताया गया है। आचार्यश्री ने प्रथम पद के माध्यम से श्रद्धालुओं को आत्मचिंतन की प्रेरणा देते हुए कहा कि धर्म को केवल सुनने तक सीमित न रखें, बल्कि उसे अपने जीवन में उतारें। वाचन के पश्चात श्रद्धालुओं ने धर्म एवं अध्यात्म से संबंधित अपनी जिज्ञासाएं भी रखीं, जिनका आचार्यश्री ने सहज और सरल तरीके से समाधान किया। प्रतिदिन शाम होने वाला छहढाला वाचन श्रद्धालुओं के लिए ज्ञान, चिंतन और आत्मजागरण का विशेष माध्यम बन रहा है। वाचन के बाद श्रद्धालुओं द्वारा गुरु की आरती की जाती है। इस दौरान मंदिर परिसर भक्तिमय वातावरण से सराबोर हो जाता है।

जनकपुरी में 5 दीक्षार्थियों की गोद भराई आचार्य आदित्य सागर ससंघ के सान्निध्य में संपन्न

25 अक्टूबर को दिल्ली में पट्टाचार्य विशुद्धसागर जी के सान्निध्य में होगी दीक्षा

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, जनकपुरी-ज्योतिनगर, जयपुर में पूज्य आचार्य श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में 5 दीक्षार्थियों की गोद भराई का मंगल कार्यक्रम श्रद्धा, भक्ति एवं वात्सल्यपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के शुभारंभ पर ब्रह्मचारी भैया ने पांचों दीक्षार्थियों–सीए अंकित भैया जी, निवासी प्रतापगढ़; अनिकेत भैया जी, निवासी मुंबई; 21 वर्षीय यश भैया जी, निवासी भिंड; प्रसन्न भैया जी, निवासी छत्रपति संभाजीनगर तथा प्राचार्य बकील चंद्र जी, निवासी बड़ौत–का संक्षिप्त परिचय दिया। इसके पश्चात दीक्षार्थियों ने आचार्यश्री के चरण वंदन की भावना से पाद प्रक्षालन किया। इस अवसर पर युवा दीक्षार्थी अनिकेत भैया जी ने पंचम काल में संयम मार्ग अंगीकार करने के अपने भाव व्यक्त करते हुए पूज्य आचार्यश्री के वात्सल्य एवं मार्गदर्शन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। आचार्य श्री आदित्य सागर जी महाराज ने मुनि जीवन के आदर्श एवं संयममय जीवन की महत्ता बताते हुए कहा कि जैन समाज साधु-संतों के प्रति सदैव श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखता है। गोद भराई कार्यक्रम में सर्वप्रथम पांचों दीक्षार्थियों का तिलक लगाकर माला, साफा एवं दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया गया। इसके पश्चात वषायोग समिति, प्रबंध समिति, महिला मंडल, युवा मंच सहित समाज के श्रद्धालुओं ने क्रमबद्ध रूप से भक्ति एवं वात्सल्य भाव के साथ पांचों दीक्षार्थियों की गोद भराई की। गोद भराई के पश्चात पांचों दीक्षार्थियों की आहारचर्या भी जनकपुरी में संपन्न हुई। कार्यक्रम में कीर्ति नगर से श्रेष्ठी अशोक चांदवाड़, महावीर गोनेर वाले, महेंद्र छाबड़ा, लाल कोठी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। पांचों दीक्षार्थियों की संयम की ओर बढ़ती यात्रा ने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक भावों से ओतप्रोत कर दिया। उनकी दीक्षा पट्टाचार्य विशुद्धसागर जी के सान्निध्य में 25 अक्टूबर को दिल्ली में होगी। श्रद्धालुओं ने दीक्षार्थियों के त्याग, तप एवं संयम के संकल्प के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए उनके मंगलमय एवं सफल संयम जीवन की कामना की। -पदम जैन बिलाला

भक्तामर स्तोत्र के 13वें काव्य में प्रभु के अनुपम मुखमंडल और आत्मिक तेज की महिमा

आचार्य विहर्ष सागर जी ने कहा—बाहरी सौंदर्य नहीं, आत्मिक निर्मलता और वीतरागता ही वास्तविक तेज

किशनगढ़. शाबाश इंडिया। आर.के. कम्युनिटी सेंटर में आचार्य श्री 108 विहर्ष सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में आयोजित धर्मसभा में भक्तामर स्तोत्र के 13वें काव्य का भावपूर्ण विवेचन किया गया। आचार्यश्री ने कहा कि इस काव्य में भगवान के अनुपम, निर्मल एवं तेजस्वी मुखमंडल की महिमा का वर्णन है। प्रभु का मुख देव, मनुष्य और नागों की आंखों को आकर्षित करने वाला है तथा तीनों लोकों में दी जाने वाली सभी उपमाओं से भी श्रेष्ठ है। आचार्यश्री ने बताया कि प्रभु के मुखमंडल की तुलना चंद्रमा से भी नहीं की जा सकती, क्योंकि चंद्रमा कलंकयुक्त है और दिन के समय उसका स्वरूप पीले पड़े पलाश के पत्ते के समान दिखाई देता है। इसके विपरीत वीतराग प्रभु का स्वरूप पूर्ण निर्मलता एवं आत्मिक तेज से प्रकाशित है। उन्होंने कहा कि भक्तामर का यह काव्य केवल बाहरी सौंदर्य का वर्णन नहीं करता, बल्कि आत्मिक निर्मलता, वीतरागता, शांति और आत्मिक तेज का संदेश देता है। जब मनुष्य राग-द्वेष, अहंकार और विकारों को दूर करता है, तब उसके व्यक्तित्व में आत्मिक तेज प्रकट होने लगता है। संसार का सौंदर्य समय के साथ फीका पड़ सकता है, लेकिन निर्मल आत्मा का तेज शाश्वत होता है।

जाप के लिए शुद्धि और विधि का बताया महत्व

आचार्यश्री ने भक्तामर स्तोत्र के जाप की विधि बताते हुए शारीरिक एवं वस्त्रों की शुद्धि के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि धार्मिक साधना और जाप के दौरान शरीर तथा वस्त्रों की शुद्धि का विशेष ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने मंत्र के माध्यम से शरीर की शुद्धि करने की विधि भी बताई। दिशाओं के महत्व को बताते हुए उन्होंने कहा कि दस दिशाएं मानी गई हैं। दिन में पूर्व दिशा की ओर मुख करके दिशा-जाप तथा रात्रि में उत्तर दिशा की ओर मुख करके जाप करने की बात कही। दक्षिण और पश्चिम दिशा की ओर मुख करके जाप नहीं करना चाहिए। जाप करते समय तीन भगवान एवं यंत्र को सामने रखकर जाप करने का महत्व भी उन्होंने बताया। उन्होंने कहा कि पंचम काल में भगवान की प्रतिमा के साथ यंत्र की साधना का भी विशेष महत्व माना गया है। आचार्यश्री ने कहा कि जब गुरु सामने हों तो उनके सान्निध्य में जाप करना विशेष पुण्यकारी होता है। माता-पिता का आशीर्वाद लेकर चरण वंदना करनी चाहिए। जाप केवल शब्दों का उच्चारण नहीं, बल्कि श्रद्धा, नियम, शुद्धि और समर्पण के साथ की जाने वाली साधना है।

धर्म को जीवन की ढाल बनाकर रखें

धर्मसभा में आचार्यश्री ने धर्म के महत्व पर जोर देते हुए कहा, ''धर्म हमारा रक्षक है। जीवन में चाहे कितना भी पैसा आ जाए, सच्चा साथी धर्म ही है।'' उन्होंने कहा कि मनुष्य को लोक-अपवाद के भय से धर्म का त्याग नहीं करना चाहिए। आचार्यश्री ने उदाहरण देते हुए कहा कि लोक-अपवाद के कारण सीता को छोड़ दिया गया, लेकिन लोक-अपवाद के चक्कर में धर्म को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। धर्म को जीवन की ढाल बनाकर रखना चाहिए। यदि हम धर्म और गुरु की बुराई करेंगे तो जीवन में धर्म का प्रभाव और चमत्कार कैसे दिखाई देगा। उन्होंने कहा कि जीवन में जो कुछ मिला है, उसके लिए धर्म को दोष नहीं देना चाहिए। ''दोष धर्म को मत दो, जितना मिला है वह धर्म के कारण मिला है।'' धर्म मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में भी सही मार्ग पर चलने की शक्ति देता है।

जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ द्वारा गौशाला में चारा एवं गुड़ वितरित

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ की ओर से सामाजिक सेवा गतिविधियों के तहत 1 सितंबर 2026 को ग्रुप कार्यकारिणी सदस्य पदम जी के जन्मदिन के अवसर पर दुर्गापुरा गौशाला में गायों को चारा एवं गुड़ वितरित किया गया। ग्रुप सचिव अजय जैन ने बताया कि इस अवसर पर ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष मनीष झंझरी, राहुल जैन, पूर्व अध्यक्ष संजय गोधा, कोषाध्यक्ष प्रीति सोगानी, निशा गोधा सहित कई सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान सदस्यों ने गौसेवा को सामाजिक दायित्व बताते हुए सेवा कार्य में सहभागिता की।